01-03-2024

Digital News

कानपुर: प्रो.डी. स्वाइन ने राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के निदेशक के पद पर कार्यभार संभाला, मीडिया से वार्ता कर दी जानकारी।

दैनिक जागरण

एनएसआइ निदेशक ने शुरू कराए थे पांच नए पाठ्यक्रम

जासं, कानपुर : राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआइ) के निदेशक नरेन्द्र मोहन का गुरुवार को अंतिम कार्य दिवस रहा। करीब 11 साल के कार्यकाल में उन्होंने संस्थान में पांच नए पाठ्यक्रम शुरू कराए और सात शोध कार्यों का पेटेंट आवेदन भी कराया। संस्थान के वरिष्ठ शिक्षक प्रो. डी स्वेन शुक्रवार को निदेशक पद का कार्यभार संभालेंगे।

गुरुवार को अंतिम कार्य दिवस पर संस्थान कर्मियों ने उन्हें विदाई दी। प्रो. नरेन्द्र मोहन ने बताया कि जब उन्होंने संस्थान का नेतृत्व संभाला तो इसे निजी संचालकों को देने पर विचार किया जा रहा था। संस्थान की आय तब 20 से 30 लाख रुपये सालाना थी।

आज संस्थान प्रतिवर्ष प्रशिक्षण व विशेषज्ञ सलाह देकर छह करोड़ रुपये कमा रहा है। संस्थान में नैनो एथेनाल यूनिट, शुगर रिफाइनरी और स्पेशियलिटी डिवीजन की स्थापना की गई। स्मार्ट क्लास कक्ष और सेमिनार हाल, का विकास कराया गया। तीन साल पहले नाइजीरिया में चीनी शोध संस्थान की स्थापना कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अमर उजाला

11 साल में नई ऊंचाइयों पर पहुंचा एनएसआई

लोकसेवा आयोग से चयनित पहले निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन सेवानिवृत्त, डी स्वेन को मिला चार्ज

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हुआ एनएसआई का नाम, बनवाए शुगर इंस्टीट्यूट

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन गुरुवार को सेवानिवृत्त हो गए। लोकसेवा आयोग से चयनित होने वाले वे एनएसआई के पहले निदेशक हैं। उनका 11 साल का कार्यकाल इंस्टीट्यूट के लिए उपलब्धियों से भरपूर रहा है। उनके कार्यकाल में इंस्टीट्यूट नई ऊंचाइयों तक पहुंचा है।

नाइजीरिया में चीनी संस्थान बनवाया। इसके साथ ही विभिन्न देशों को तकनीक दीं और उनके शर्करा अधिकारियों को इंस्टीट्यूट में प्रशिक्षण दिया। इसके साथ ही अंतरराष्ट्रीय बाजार की मांगों के अनुरूप विभिन्न फ्लेवर और विटामिन युक्त चीनी बनाई। गन्ने की खोई से मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार किए। खासतौर पर इथेनॉल उत्पादन की तकनीक में विशेष कार्य किया। प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कार्यभार प्रोफेसर डी स्वेन को सौंपा। प्रोफेसर स्वेन नए निदेशक के आने तक कार्यवाहक के रूप में काम करेंगे। गुरुवार को एनएसआई के अधिकारियों और कर्मचारियों ने प्रोफेसर मोहन को भावभीनी विदाई दी।

यहां बताया गया एनएसआई की पहले हालत यह थी कि वर्ष 2009 में चीनी मिलों की स्थिति का आकलन करने के लिए गठित केंद्रीय आयोग ने एनएसआई को बंद करने की संस्तुति की थी। तब निदेशक वरिष्ठता क्रम के आधार पर बनते थे। बाद में लोकसेवा आयोग से निदेशक का चयन होने लगा। प्रो. नरेंद्र मोहन पहले निदेशक चयनित हुए। उनके आने के बाद सुधार का क्रम शुरू हुआ।

एनएसआई निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन को विदाई देते अधिकारी व कर्मचारी। संवाद

उपलब्धियां

- पर्यावरण विज्ञान, गन्ना उत्पादकता और परिपक्वता प्रबंधन, चीनी रिफाइनरी संचालन आदि पर पांच नए पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए।
- अल्कोहल प्रौद्योगिकी, मशीनरी डिजाइन आदि प्रयोगशालाएं खुलीं।
- नैनो इथेनॉल यूनिट, बूअरी, शुगर रिफाइनरी, स्पेशियलटी शुगर डिवीजन की स्थापना।
- क्यूबा, इंडोनेशिया, केन्या, नाइजीरिया, मिस्र, यमन, श्रीलंका, भूटान, फिजी, ईरान आदि देशों के विज्ञानियों को प्रशिक्षण।
- 60 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित, सात पेटेंट आवेदन दायर, संस्थान की आय में 20 गुना वृद्धि।